विचार बिन्दु

आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्म संयम, केवल यही तीन जीवन को परम शांति सम्पन्न बना देते हैं। –टेनीसन

चैन से रहना है तो चैन से रहने दीजिए!

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत में जिन क्षेत्रों में स्वागत योग्य बदलाव हुए हैं उनमें से एक क्षेत्र जीवन प्रत्याशा भी है। जीवन प्रत्याशा का अर्थ है किसी के जन्म के समय सांख्यिकीय औसत के आधार पर प्राप्त किया गया इस बात का अनुमान कि वह सामान्यतः कितने वर्ष जीवित रहेगा। वैसे सारी दुनिया में जीवन प्रत्याशा में स्वागत योग्य बदलाव हुए हैं। अब यही बात देख लीजिए कि कांस्य युग में जो जीवन प्रत्याशा मात्र 26 वर्ष थी, वह सन 2010 में (वैश्विक स्तर पर) बढ़ कर 67 वर्ष हो गई थी। वर्ष 2021 में वैश्विक स्तर पर जीवन प्रत्याशा 70 वर्ष से अधिक थी जो मात्र दो सौ वर्ष पूर्व इसकी लगभग आधी ही थी। बताया जाता है कि सन् 1800 तक दुनिया के किसी भी भाग में जीवन प्रत्याशा चालीस वर्ष से अधिक नहीं थी। हमारे अपने देश में भी जीवन प्रत्याशा इसी तरह बढ़ी है। सन 1950 में जहां यह चालीस वर्ष के आस पास थी, सन 2024 तक आते--आते बढ़कर 72.2 वर्ष हो गई है। भारत में अभी स्त्री और पुरुष जीवन प्रत्याशा में थोड़ा अंतर है। स्त्रियों की जीवन प्रत्याशा जहां 73.9 वर्ष है वहीं पुरुषों की जीवन प्रत्याशा 70.7 वर्ष है। भारत के अलग-अलग राज्यों में जीवन प्रत्याशा में थोड़ा बहुत अंतर है। जहां केरल में जीवन प्रत्याशा 75.2 वर्ष है वहीं राजस्थान में यह 68.5 वर्ष है। यह और जान लीजिए कि दुनिया भर में सर्वाधिक जीवन प्रत्याशा हॉंग कॉंग में 85.63 वर्ष है। इससे थोड़ा ही पीछे जापान है जहां यह प्रत्याशा 84.85 वर्ष है। दुनिया भर में जीवन प्रत्याशा बढ़ने के मूल मंऔ बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और सेहत के प्रति तेज़ी से बढ़ती जा रही जागरूकता मुख्य कारण हैं। अलग-अलग जगहों पर जीवन प्रत्याशा अंतर के मूल में भी ये ही बातें निर्णायक साबित होती हैं।

जीवन प्रत्याशा का बढ़ना निश्चय ही प्रशंसा की बात है। भला किसे अच्छा नहीं लगेगा कि वह और उसके परिजन अधिक लम्बे समय तक जीवित रहें और स्वस्थ एवं सुखी रहते हुए जीवित रहें! पूरी दुनिया के साथ-साथ हमने भी अपने नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं और उन प्रयासों के परिणाम भी दिखाई देते हैं। लेकिन यह जानना भी कम रोचक नहीं होगा कि इन सुपरिणामों के कुछ पक्ष ऐसे भी हैं जो चिंता उत्पन्न करते हैं। आज हम ऐसे ही कुछ पक्षों पर बात करने का प्रयास करेंगे।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) की एक रिपोर्ट बताती है सन 2022 में भारत में साठ बरस या उससे अधिक उम्र के लोगों की संख्या 14.9 करोड़ थी, जो देश की कुल जनसंख्या का 10.5 प्रतिशत थी। अनुमान किया गया है कि सन 2050 तक देश में बुज़ुर्गों की संख्या बढ़कर 34.7 करोड़ हो जाएगी और यह देश की आबादी का 20.8 प्रतिशत होगी। इसी रिपोर्ट में यह भी अनुमान लगाया गया है कि सन 2046 तक आते-आते भारत में बुज़ुर्गों की संख्या बच्चों की संख्या से अधिक हो सकती है। ये आंकड़े उत्साहवर्धक हैं या डराने वाले? बेशक लोगों का अधिक समय तक जीना सुखद है। लेकिन यह न भूला जाए कि ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है, कार्यक्षमता घटती जाती है। जो लोग किसी नौकरी में होते हैं वे साठ की उम्र के आस-पास सेवा निवृत्त हो जाते हैं, और जो नौकरी में नहीं भी होते हैं, ख़ुद कोई काम कर रहे होते हैं, या तो उनकी अगली पीढ़ी उन्हें काम नहीं करने देती है या अगर उनकी स्थितियां ऐसी हों कि उन्हें काम करते रहना है, तो भी पले जितना काम नहीं कर पाते हैं। जो नौकरी से रिटायर होते हैं उन्हें पेंशन दी जाती है और वे आर्थिक रूप से सामान्यतः संतोषप्रद स्थिति में होते हैं। लेकिन जो उन्हें पेंशन देते हैं वे पेंशन के बढ़ते व्यय भार को लेकर चिंतित होते रहते हैं। इस वे में सरकारे भी शामिल हैं और निजी क्षेत्र भी। हमारे देश में पेंशन स्कीम को लेकर चल रहे ताज़ा विवाद इसी स्थिति की तरफ इशारा करते हैं।

बढ़ती उम्र को जितनी ज़रूरत आर्थिक संबल की है, उससे कम ज़रूरत इस बात के प्रशिक्षण की नहीं है कि जब तक आपके पास गाड़ी का स्टीयरिंग था, आपने अपनी तरह से गाड़ी को चला लिया। अब जब स्टीयरिंग पर कोई और बैठा है, आप निश्चिंत होकर बैठिये, उन्हें अपनी गाड़ी अपनी तरह से चलाने दीजिए।

जिन्हें किसी तरह की पेंशन नहीं मिलती है और अगर वे आर्थिक रूप से सुविधाजनक स्थिति में नहीं हैं तो उनके लिए यह बढ़ी हुई उम्र बड़े कष्ट का कारण बनती है। हमारे यहां सामाजिक सुरक्षा जैसी किसी पुख़्ता व्यवस्था का न होना बहुत बड़ी कमज़ोरी है। बढ़ती उम्र के साथ सेहत अधिक देखभाल की मांग करने लगती है और सार्वजनिक क्षेत्र की चिकित्सा व्यवस्था जिस हालत में है, उसकी बात न ही की जाए तो बेहतर होगा। हमारी अधिकांश सरकारों ने चिकित्सा और शिक्षा को अपनी प्राथमिकता सूची से जैसे हटा ही दिया है। निजी क्षेत्र के अस्पताल बहुत महंगी सुविधाएं देते हैं और उन्हें पाना हरेक के वश की बात नहीं है। चिकित्सा बीमा भी हमारे यहां अधिक लोकप्रिय नहीं हुआ है और जिन्होंने यह सुविधा ले रखी है वे भी इससे संतुष्ट नहीं हैं। सरकारों ने साधनहीन नागरिकों के लिए थोड़ी-बहुत सुविधाएं दी ज़रूर हैं लेकिन वे ऊंट के मुंह में जीरे के समान हैं। उनमें बहुत ज़्यादा वृद्धि की ज़रूरत है। जिन नागरिकों ने अपनी पूरी ज़िंदगी परिवार, समाज और देश के लिए कुछ न कुछ किया है, जब वे कुछ कर पाने में समर्थ नहीं रह जाएं तो समाज का (और सरकार का भी) दायित्व बनता है कि उनकी समुचित सार-संभाल करे। सरकारों के साथ-साथ सामाजिक-धार्मिक संगठनों को भी इस दिशा में अधिक सक्रिय होना चाहिए। जैसे-जैसे समाज में अधिक वय के लोगों की संख्या बढ़ रही है, इस तरह के प्रयासों की ज़रूरत और अधिक तीव्र होती जा रही है।

बढ़ी उम्र के लोगों की समस्याएं केवल आर्थिक ही नहीं हैं। वे अनेक प्रकार की सामाजिक-मानसिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का भी सामना करने को अभिशप्त हैं। जो लोग किसी तरह की नौकरी में होते हैं वे सेवा निवृत्त होते ही फालतू हो जाते हैं। न उनके पास करने को कोई काम रह जाता है और न समय बिताने का कोई तरीका। ऐसे में उनके पास कुढ़ते रहने के सिवा कोई चारा नहीं रह जाता है। सेवा निवृत्ति कोई आकस्मिक घटना नहीं होती है, लेकिन हमारे नियोजक/नियोक्ता अपने कर्मचारियों को सेवा निवृत्त जीवन बिताने के लिए शायद ही कभी मानसिक रूप से कोई तैयारी कराते या प्रशिक्षित करते हों। दुनिया के बहुत सारे देशों में ऐसा होता है। हमारे यहां सामान्यतः नहीं होता। बहुत सारे लोग हैं जो अपनी पूरी ज़िंदगी किसी तरह का कोई शौक नहीं पालते हैं। उनके लिए सेवा निवृत्ति एक अभिशाप साबित होती है। मैंने एक बार अपने एक शिक्षक मित्र की इसी तरह की व्यथा सुन कर उन्हें सलाह दी कि वे कुछ पढ़ा करें, तो उन्होंने पलट कर पूछा कि इससे क्या फायदा होगा? अगर मानसिकता यह हो कि कुछ भी करने से क्या फायदा होगा, तो जीवन नरक बनना ही बनना है। ऐसे लोग पार्क वगैरह में सारी दुनिया के प्रति अपनी नाराज़गी व्यक्त करते हुए आपको मिल जाएंगे। न ये सुख से रहते हैं और न अपने घर वालों को सुख से रहने देते हैं। अपनी नई मिली फुर्सत का दुरुपयोग ये घर के, बीबी बच्चों के सामान्य रूप से चल रहे जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप करने में करते हैं।

जो लोग नौकरी से इतर किसी व्यवसाय आदि में भी रहे वे भी एक ख़ास उम्र के बाद, और अगर उनकी अगली पीढ़ी समर्थ हो गई हो तो भी उनके कामों में अनावश्यक हस्तक्षेप करने में अपनी ऊर्जा नष्ट करते हैं। ऐसों के लिए उनका पचास साल का बेटा भी बच्चा ही होता है और वे चाहते हैं कि उसके जीवन के सारे फैसले ये ही करें। ऐसे में टकराव या बदमज़गी अपरिहार्य है। मुझे हमेशा लगता है कि हमारे बुज़ुर्गों को भी इस बात के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि अपनी तरह से अपनी ज़िंदगी जी लेने के बाद उन्हें नई पीढ़ी को उनकी तरह से उनके जीवन को जीने देना चाहिए। हो सकता है, वे कोई ग़लती करें, करने दें। परिणाम भी वे ही भुगतेंगे। आखिर आपने भी तो अपनी तरह से अपना जीवन जिया है। अगर आप जी सकते थे तो आपके बाद वाली पीढ़ी क्यों नहीं जी सकती?

बढ़ती उम्र को जितनी ज़रूरत आर्थिक संबल की है, उससे कम ज़रूरत इस बात के प्रशिक्षण की नहीं है कि जब तक आपके पास गाड़ी का स्टीयरिंग था, आपने अपनी तरह से गाड़ी को चला लिया। अब जब स्टीयरिंग पर कोई और बैठा है, आप निश्चिंत होकर बैठिये, उन्हें अपनी गाड़ी अपनी तरह से चलाने दीजिए। अगर आप समाज के लिए कुछ उपयोगी कर सकते हैं, ज़रूर कीजिए, नहीं कर सकते हैं तो किसी शौक में अपना मन लगाइये। और अगर वह भी नहीं कर सकते हैं तो आराम से बैठिए और जो जैसा कर रहे हैं उन्हें करने दीजिए। उनके काम में मीन मेख मत निकालिए! यही आपका सबसे बड़ा उपकार होगा!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

निवेश का हिसाब-किताब भी रहे

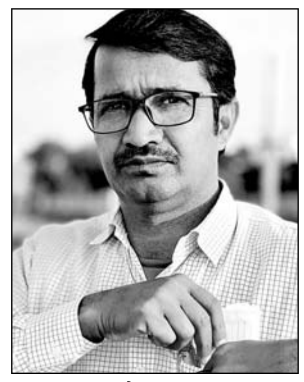

रामगोपाल जाट

राजस्थान की 9 महीने पुरानी भजनलाल सरकार ने मुंबई में राइजिंग राजस्थान निवेश सम्मेलन किया है। सरकार ने दावा किया है कि इस सम्मेलन में 4.50 लाख करोड़ के निवेश के मार्ग खुले हैं। इससे 6.78 लाख नौकरियों का दावा किया गया है। इसके अलावा सरकार ने कहा था कि अगले पांच साल में 4 लाख सरकारी नौकरियां दी जाएंगी। सीएम भजनलाल ने यह भी दावा किया है कि राजस्थान को 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाएंगे। यदि ऐसा होता है तो बहुत अच्छी बात है। जितना बाहरी निवेश राजस्थान में आएगा, उतने ही रोजगार के अवसर पैदा होंगे और राज्य का युवा नौकरी पाकर परिवार का पालन-पोषण कर पाएगा। सरकारी आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में आज शिक्षित बेरोजगारों की संख्या 45 लाख से अधिक हो चुकी है। यह संख्या प्रतिवर्ष लगातार बढ़ती जा रही है। राज्य के सरकारी और निजी विवि मिलकर प्रतिवर्ष 6 लाख से अधिक डिग्रीधारी युवा तैयार कर देते हैं, जिनको रोजगार की आवश्यकता होती है।

राजस्थान में निवेश आता है तो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सभी को लाभ होता है। कारोबार से लेकर कृषि तक के क्षेत्र में परिवर्तन होता है। विकास के मार्ग खुलते हैं। इसलिए यदि राज्य सरकार निवेश लाने में सफल होती है तो बहुत बधाई की बात है। जिन कारोबारियों के साथ सरकार एमओयू कर रही है, उनको लेकर यह बात भी जांच लेनी चाहिए कि बीते 25 साल में कोई ऐसा एमओयू तो नहीं किया है, जो केवल कागजी ही रह गया हो। आपको याद होगा इस तरह से निवेश के लिए वसुंधरा राजे ने अपने पहले कार्यकाल में प्रयास किए थे, लेकिन अशोक गहलोत ने अपने पहले कार्यकाल में इसकी शुरुआत कर दी थी, बल्कि जिन केसी बोकाड़िया को फिल्म सिटी बनाने की फाइल सीएम ने दो घंटे में निपटा दी है, वो स्व. भैरोंसिंह शेखावत के समय से आगरा रोड पर फिल्म सिटी बनाने के सपने दिखा रहे हैं। मोटे तौर पर इसका भी हिसाब-किताब सरकार को रखना चाहिए कि किस निवेशक ने एमओयू करने के बाद भी राजस्थान में निवेश नहीं किया है।

क्योंकि ऐसे कई कारोबारी हैं, जो निवेश के लिए एमओयू कर लेते हैं, उसके लिए प्रमोटर्स से धन उगाही कर लेते हैं, लेकिन असल में निवेश करते ही नहीं हैं। वसुंधरा राजे की दूसरी सरकार में रिसरजेंट राजस्थान सम्मेलन में 3.50 लाख करोड़ के एमओयू हुए थे। पिछले साल की जनवरी में अशोक गहलोत सरकार ने भी 1.36 लाख करोड़ के एमओयू साइन किए थे। कुल मिलाकर देखा जाए तो बीते 25 साल में राजस्थान की सरकारें कोई 12-14 लाख करोड़ के एमओयू कर चुकी हैं, लेकिन वास्तव में निवेश कितना आया, यह महत्वपूर्ण है।

भजनलाल शर्मा भले ही संगठन में अनुभवी हों, लेकिन सत्ता के मामले में अनुभव की कमी है। अतः इस बात का ध्यान जरूर रखना चाहिए कि सरकारी अधिकारी कहीं वाहवाही के लिए पुराने एमओयू दुबारा तो साइन नहीं करवा रहे हैं। दो दिन पहले अशोक गहलोत ने कहा है कि उनके लगाए अधिकारी ही सरकार चला रहे हैं। इसलिए नई सरकार को बदनाम करने के लिए किसी भी स्तर पर खेल हो सकता है। यह बात सही है कि सरकार को सकारात्मक सोच के साथ अपने अधिकारियों को उचित जिम्मेदारी दी जानी चाहिए, लेकिन आंख मीचकर विश्वास भी नहीं करना चाहिए। सत्ता तो पांच साल ही रहती है, और सफलता अथवा असफलता के लिए जिम्मेदारी भी सीएम और मंत्रियों की ही होती है, अधिकारियों की नहीं होती। चार साल बाद फिर विधानसभा चुनाव हैं, उसमें जनता जवाब मांग लेगी।

अतः जनता को जवाब देने के लिए सरकार के पास पूरा हिसाब-किताब होना चाहिए। अभी तक अपराध, सरकारी विफलता और छोटे मुद्दों को बड़ा करके चुनाव लड़ा और जीता जा रहा है, लेकिन शिक्षा की पहुंच साथ ही सोशल मीडिया की शिक्षा ने लोगों को बहुत जागृत कर दिया है। अब गांव का आम आदमी भी सरकार के कामकाज पर निगाहें गढ़ा कर बैठा है। उसे भी चुनाव से पहले हिसाब चाहिए होता है। सत्ता उसे हिसाब दे या नहीं, राजनीतिक दल अपना हिसाब दे या नहीं, लेकिन मतदान से पहले वह अपना निर्णय इसी सरकारी हिसाब के हिसाब से तय करता है।

भाजपा की वसुंधरा राजे 10 साल राज कर चुकी हैं। कांग्रेस के अशोक गहलोत 15 साल शासन का सुख भोग चुके हैं। भजनलाल शर्मा पहली बार के सीएम हैं, इसलिए इन्हें सोच समझकर कदम उठाने होंगे। एक गलत कदम भविष्य पर सवाल खड़े कर देता है। शासन अधिकारियों के दम पर चलता है, लेकिन सीएम का राजनीतिक चरित्र सीएम के आसपास वाले सहायकों के बर्ताव से चलता है। इसलिए सीएम को अपने सलाहकार भी बेहद सोच समझकर चुनने चाहिए। एक गलत चुनाव सीएम की छवि को पूरी तरह से धूमिल कर सकता है।

–रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार

अलवर में भर्तृहरि मेला चढ़ने लगा परवान, साठ हजार भक्तों ने बाबा के दर्शन किये

अलवर, (निसं)। अलवर में भृतहरि मेला परवान चढ़ने लगा है यहां श्रद्धालु मेले से पूर्व ही बाबा के दर्शनों को आने लगे है श्रद्धालुओं में बाबा के प्रति भारी आस्था को देख जिला प्रशासन पूरी तरह से चाक चौबंद है। वहीं भर्तृहरि बाबा के मुरमुरे के प्रसाद पर प्रशासन द्वारा लगाई रोक का मेलार्थियों ने स्वागत करते हुए मेला मजिस्ट्रेट देवी सिंह का आभार व्यक्त किया है।

अलवर तपोभूमि इन दिनों आस्था का केन्द्र बनी हुई है। यहां बाबा भर्तृहरि का मेला भरना शुरू हो गया है। मेला चार सिंतबर से अपने यौवन पर आ जाएगा। हालांकि मेला तीन दिवसीय है। भराभर का मेला 9 सिंतबर से चालू होगा लेकिन मेला चालू होने से पूर्व ही भर्तृहरि बाबा के दर्शन को रविवार को भारी संख्या में करीब साठ हजार मेलार्थी पहुंचे और बाबा भर्तृहरि के दर्शनों का लाभ उठाते हुए अपनी मन्नतें मांगी। इस मेले में राजस्थान, हरियाणा, यूपी सहित अन्य प्रदेशों से भी श्रद्धालु आते है जिनकी गिनती सम्भव नहीं है इसलिए इस मेले को लक्खी मेला कहा जाता है। सभी समाज को एकता के सूत्र में पिरोने वाले बाबा भर्तृहरि के मेले में पहली बार सभी गांवों के ग्रामीणों ने एक ध्वज यात्रा निकालते हुए भर्तृहरि धाम पहुंचे। अलवर ग्रामीण विधानसभा की माधोगढ पंचायत समिति के इन्दौक गांव में पहली बार इस ध्वज यात्रा का आयोजन किया गया। यह ध्वज यात्रा सभी समाज के लोगों द्वारा निकाली गई। यह यात्रा सुबह 9 बजे इंदौक गांव के प्राचीन श्री राधा कृष्ण मंदिर से प्रारम्भ होकर भृतहरि धाम पहुंची जहां श्रद्धालुओं ने बाबा भृतहरि को प्रसाद चढ़ाया और वितरण किया। इस ध्वज यात्रा में 36 कौम के लोग मौजूद थे। यह यात्रा हिन्दू एकता की इस मेले में मिसाल बनी है जिसका सभी लोगों ने स्वागत किया है।

रविवार को भारी संख्या में करीब साठ हजार मेलार्थी पहुंचे और बाबा भर्तृहरि के दर्शनों का लाभ उठाते हुए अपनी मन्नतें मांगी।

बंदरों ने एक सप्ताह में दस लोगों को किया घायल

बंदरों के आतंक से परेशान सिंघाना के ग्रामीण प्रशासन से कई बार लगा चुके हैं गुहार

खेतड़ी, (निसं)। सिंघाना कस्बे में इन दिनों बंदरों के आंतक से ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। समस्या को लेकर ग्रामीण कई बार प्रशासन से गुहार लगा चुके हैं। इसके बावजूद भी समाधान नहीं होने पर प्रशासन से समस्या का समाधान करने की मांग की है।

ग्रामीणों ने बताया कि गांव में इन दिनों बंदरों की संख्या अधिक हो जाने के कारण लोग घरों में रहने को मजबूर हो रहे हैं। बंदर आए दिन किसी न किसी के घर में घुसकर बच्चे, बुजुर्गों, राहगीरों व महिलाओं पर हमला कर घायल कर देते हैं। इसके अलावा घरों में सुखाए जाने वाले कपड़े व सामान को भी उठा ले जाते हैं। राजेश स्वामी ने बताया कि बंदरों के आतंक की वजह से ग्रामीणों के जान पर आफत बनी हुई है। तीन दिन पहले दोपहर को भी बंदर ने उसके बेटे मनू पर हमला कर घायल कर दिया था। बंदरों की संख्या अधिक होने से लोगों का घरों से निकलना मुश्किल हो रहा है। बंदरों की टोलियां घरों में घुसकर घर में रखा सामान उठा ले जाती हैं।

बंदरों के काटने से घायल हुए ग्रामीण ने राजकीय अस्पताल में इलाज कराया।

- **ग्रामीणों ने बताया कि गांव में इन दिनों बंदरों की संख्या अधिक हो जाने के कारण लोग घरों में रहने को मजबूर हो रहे हैं**

उन्होंने बताया कि बंदरों का इस समय आतंक इस कदर बढ़ गया है कि गांव के सरकारी अस्पताल में बंदर के काटने से रोजाना एक केस आ रहा है, जहां रेबीज का इंजेक्शन लगाकर उनका उपचार किया जाता है। महिला सुनीता देवी ने बताया कि जब वह अपने छत पर कपड़े सुखाने के लिए गई थी। कुछ देर बाद जाकर देखा तो उसके कपड़े वहां नहीं मिले।

जब उसने अन्य कपड़े छत से उतारने का प्रयास किया तो बंदरों ने उस पर हमला कर दिया, जिससे वह घायल हो गई। घायलावस्था में उसे उपचार के लिए राजकीय अस्पताल ले जाएगा। ग्रामीणों ने बताया कि बंदरों के आतंक की समस्या से परेशान होकर ग्रामीण कई बार प्रशासन से इनको पकड़कर दूर ले जाने की मांग उठा चुके हैं, लेकिन प्रशासन मामले को लेकर कोई ठोस कदम नहीं उठा रहा है। इस दौरान ग्रामीणों ने बताया कि यदि प्रशासन ने जल्द ही मामले में कोई ठोस कार्रवाई नहीं की तो ग्रामीणों की ओर से सिंघाना पालिका कार्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना में 4 माह बाद प्रदेशवासी किसी अन्य राज्य में भी करा सकेंगे इलाज : चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर

- **1 माह बाद अन्य राज्यों के मरीज राजस्थान के किसी भी अस्पताल में इलाज कराने आ सकेंगे**
- **चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने जोधपुर के उम्मेद हॉस्पिटल का दौरा किया। इस दौरान वे ढाई साल की रेप पीड़ित मासूम से भी मिले**

जोधपुर, (कासं)। चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने कहा कि मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना में 4 माह बाद प्रदेशवासी किसी अन्य राज्य में भी इलाज करा सकेंगे। वहीं 1 माह बाद अन्य राज्यों के मरीज राजस्थान के किसी भी अस्पताल में इलाज कराने आ सकेंगे। उन्होंने कहा-हम चाहते हैं कि पेशेंट के पास इलाज को लेकर विकल्प हों। इसके लिए हमारी इंश्योरेंस कंपनियों के साथ बात चल रही है। ऐसे में आने वाले समय में प्रदेश के लोग अपने पसंद के डॉक्टर या हॉस्पिटल में इलाज करवा पाएंगे। चिकित्सा मंत्री ने इस दौरान विभाग में होने वाली 50 हजार भर्तियों को लेकर भी चर्चा की।

चिकित्सा मंत्री कल देर रात जोधपुर में थे। उन्होंने यहां उम्मेद हॉस्पिटल का दौरा किया और चिकित्सा सुविधाओं और व्यवस्थाओं का जायजा भी लिया। वे ढाई साल की रेप पीड़ित मासूम से भी मिले। चिकित्सा मंत्री ने उम्मेद अस्पताल में व्यवस्थाओं का जायजा भी लिया।

मीडिया से बातचीत करते हुए खींवसर ने चिकित्सा विभाग में भर्तियों पर भी चर्चा की। उन्होने कहा- सरकार रिक्त पदों को भरने की दिशा में काम कर रही है। चिकित्सा विभाग में कुल 55 हजार पद रिक्त हैं। जिनमें से 50 हजार रिक्त पदों पर भर्तियां नवंबर-दिसंबर तक हो जाएगी।

चिकित्सा मंत्री ने यहां ढाई साल की रेप पीड़ित बच्ची के स्वास्थ्य को लेकर भी डॉक्टर से जानकारी ली। उन्होंने कहा कि जिस तरह का कृत्य आरोपी ने किया है उसके बारे में हम लोग सोच भी नहीं सकते हैं। उन्होंने कहा कि पूरे भारत में जिस तरीके से आजकल पोर्नोग्राफी साइट ने हमारी सोसाइटी को खराब कर दिया है। हमारे समाज में महिलाओं का सम्मान किया जाता था। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से रेप की घटनाएं बढ़ रही है लेकिन इस मामले में न्यायालय बेहतर काम कर रहा है। न्यायालय इस तरह के मामलों में सख्त निर्णय ले रहा है।

खींवसर ने मामले को लेकर चिकित्सा विभाग के एसीएस को निर्देशित किया है कि हर हॉस्पिटल के हर कोने में सीसीटीवी कैमरे लगे हो। पीएचसी लेवल तक यह काम होना चाहिए। जिससे पूरे अस्पताल की मॉनिटरिंग की जा सके। ब्लैक स्पॉट को खास तौर पर चिह्नित किया जाए।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 2 सितम्बर, 2024

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, सोमवार, विक्रम संवत 2081, मघा नक्षत्र रात्रि 12:29 तक, मिथ योग सांय 6:20 तक, चतुष्पद करण सांय 6:23 तक, चन्द्रमा सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मिथुन, बुध-कर्क, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सोमवती और पितृकार्य अमावस्या, पिढोरी और कुशग्रहणी अमावस्या, मन्वादि, जैन वषमोत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:45 तक, शुभ 9:19 से 10:23 तक, चर 2:01 से 3:35 तक, लाभ-अमृत 3:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:11, सूर्यास्त 6:43

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है।

वृष
घर-परिवार में सुख-शांति रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

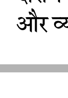

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

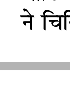

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

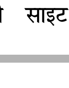

सिंह
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित धन प्राप्त होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

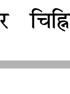

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

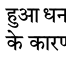

तुला
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

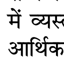

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

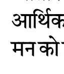

धनु
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

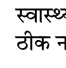

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

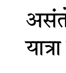

मीन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।